[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3664

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भोज्य पदार्थो में अप्राकृतिक रंगो के उपयोग से समाज एवं स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभावो का अध्ययन

साधना राज

रंग की परिभाषा रंग हज़ारो वर्षो से हमारे जीवन में व्याप्त है। प्रारंभ में मानव प्राकृतिक रंगों का हि उपयोग करता था। उल्लेखनीय है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में सिंधु घाटी सभ्यता की जो वस्तुए प्राप्त हुई है उनमें ऐसी मूर्तियाँ एवं बर्तन भी थे जिन पर रंगाई की गई थी। जिसमें लाल रंग के कपड़े का एक टुकडा भी मिला। विषेषज्ञों के अनुसार इस पर मजीठ या मजिष्ठा की जड़ से तैयार किया गया रंग चढ़ाया गया था। हाजरों वर्षों तक मजीट की जड़ और बक्कम वृक्ष की छाल लाल रंगा का मुख्य स्त्रोत थी। पीपल, गूलर और पाकड़, हल्दी आदि से रंग तैयार किया जाता था किंतु आजकल कृत्रिम रंगो को उपयोग जोरो पर है जो न सिर्फ कपडो बल्की भोज्य सामग्रीयों में अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है।

भोज्य पदार्थो में रंग प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक

स्वास्थ्य चिकित्सा के रूप में प्राकृतिक रंग के अलावा कई प्राकृति रंगों में चिकित्सीय गुण पाए जाते है जो कि दर्दनाषक दवाओं, एंटीबायोटिक, एंटीवायरल और एंटी इंफ्लेमेटरी होते है जैसे हल्दी वातहर और पेट विकार के निदान में सहायक है। भारत में रंग चिकित्सा द्वारा भी अनेको रोगो का निदान किया जाता है इसमें विभिन्न प्रकार की रंगो वाले बाटलो में तेल रखकर सूर्य के प्रकाष में एक निषचित समयावधी में रख कर उसका रोगो में उपयोग किया जाता है।

अप्राकृतिक रंगों का प्रभाव

भोजन में अप्राकृतिक निले रंग से कैंसर, लाल रंग से थायरॉयड, हरे रंग से कैंसर, पीले रंग से गुर्दे में ट्यूमर की समस्या बढ रही है ये रंग अधिकांष कैंडी, केक, कपकेक, चेरी, सॉफ्ट ड्रिंक्स में उपयोग किया जाता है जिससे कि छोटे बच्चे उसके सुंदर एवं आकर्षक रूप को देखकर उसकी मांग करे। कृत्रिम रंग फास्ट फूड और नकली खाद्य पदार्थ वर्तमान की एक गंभीर समस्या है। एक उपभोक्ता वकालत करने वाले समूह द्वारा हाल ही में एक याचिका जो कि भोजन में कृत्रिम रंगों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए लगायी गई है। इससे वनज बढना, असमय बाल सफेद होना आदि समस्याए भी हो रही है।

सामाजिक एवं संवैधानिक उपचार

वर्तमान में सामाजिक स्तर पर प्रत्येक जिम्मेदार नागरीक को इसके प्रति अपना दायित्व निभाते हुए सहयोग देना चाहिए जिसमें जागरूकता सर्वप्रथम आवष्यक है।

एक जर्नल में 2007 में प्राकृतिक स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में रंगो के खतरो पर अध्ययन किया गया तथा स्वास्थ्य कि चिंता पर कनाडा में संघीय सरकार ने भोजन में मिलाए जाने वाले रंगों की लेबलिंग को आवष्यक किया।

निष्कर्ष भारत में न केवल प्रतिष्ठित कंपनियों, होटल, बेकरी, कन्फेक्षनी और मिठाई की दुकानों अपितु छोटे या ग्रामीण स्तर पर भी किए जाने वाले रंगो जो भी भोज्य पदार्थो में उपयोग किए जाते है अत्यधिक असंतोषजनक स्थिति में है। कुछ रिपोर्टो के अनुसार सबसे अधिक खराब स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों तथा स्थानीय स्तर पर मिठाई, हलवाई दुकार, बेकरी, आइस्क्रीम और अन्य खाद्य वस्तुओं की तैयारी में इस्तेमाल किया जा रहा है। इसमें उन रंगो का उपयोग किया जा रहा है जिसके अनुमति षासन नही देता जो कि मानव एवं जानवरो के अतिरिक्त प्रकृति पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे है। खाद्य रंग के सुरक्षित उपयोग के लिए सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय स्तर पर इस मुद्दे को प्रारंभ करने एवं जागरूकता पैदा करने की तत्काल आवष्यकता है। इससे मनुष्य की औसत आयु घट रही है तथा नई–नई बीमारीयो जन्म ले रही है।

संदर्भ –

1 *क्रेग एफ 2006। वायुमंडलीय विकिरण की बुनियादी बातों : 400 समस्याओं के साथ्ज्ञ एक परिचय। विले–आई.एस.बी. एन. 3527405038।*
2 *डॉ. वी.पी. कपूर राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान (NBRI), लखनऊ, भारत से अवकाष प्राप्त वैज्ञानिक है।*
3 *कैली स्कोटी, एच.एच.सी. 18 जनवरी 2008*